

श्रीमद्भागवत स्कन्ध 8 अध्याय 22: बली का समर्पण

18 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



वरुण के पाशों से बँधे और तीनों लोकों से रहित, महान राजा बली दिव्य वामन के समक्ष अपना मस्तक झुकाते हैं और वह एकमात्र वस्तु अर्पित करते हैं जो अभी भी उनकी अपनी है — भगवान से प्रार्थना करते हुए कि वे अपना तीसरा चरण उसी पर रखें।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्जम में आपका पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिमयी यात्रा। यह बाईसवाँ अध्याय वामन-कथा को उसके आध्यात्मिक शिखर तक ले जाता है, जहाँ बँधा और सर्वस्व-रहित राजा अपने भगवान को निर्भय भक्ति से उत्तर देता है — और भगवान स्वयं यह रहस्य खोलते हैं कि वे अपने प्रियतम भक्तों को संसार जिसे सौभाग्य कहता है उससे रिक्त क्यों कर

देते हैं।

अध्याय की जानकारी

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 8 (आठवाँ स्कन्ध)
- अध्याय: 22 (बाईसवाँ अध्याय)
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित से कहते हुए — बली, प्रह्लाद, विन्ध्यावली, ब्रह्मा और भगवान के वचन सहित
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: नर्मदा पर भृगुकच्छ में बली की यज्ञभूमि
- केन्द्रीय विषय: बली का अपना मस्तक अर्पित करने का निर्भय प्रस्ताव, प्रह्लाद, विन्ध्यावली और ब्रह्मा की याचनाएँ, और भगवान द्वारा अपनी कृपा के रहस्य का प्रकटीकरण एवं सुतल का दान
- प्रमुख श्लोक श्रेणी: स्कन्ध 8, अध्याय 22, श्लोक 1-36
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

इक्कीसवें अध्याय में, भगवान का चरण ब्रह्मा के लोक तक उठा, जिन्होंने उसका पूजन किया जब पवित्र गंगा जन्मी; असुर क्रोध से उठे किन्तु लौटा दिए गए, और बली — अपने गुरु के शाप का स्मरण करके और काल की शक्ति के आगे झुककर — ने अपनी सेना को रोक लिया। तब गरुड़ ने राजा को वरुण के पाशों से बाँध दिया, और भगवान ने उनसे अपने तीसरे चरण के लिए भूमि माँगी। यह अध्याय बली के उत्तर से आरम्भ होता है।

बली का निर्भय उत्तर

भगवान द्वारा इस प्रकार अपमानित किए जाने पर भी, असुरराज बली मन से विचलित न हुए, और उन्होंने एक शान्त तथा निर्भय उत्तर दिया। यदि भगवान उनके वचन को अधूरा मानते हैं, तो वे उसे पूरा करेंगे — और, चूँकि देने को अब उनके पास और भूमि नहीं थी, उन्होंने वह एकमात्र वस्तु अर्पित की जो अब भी उनकी अपनी थी।

श्रीबलिरुवाच

यद्युत्तमश्लोक भवान् ममेरितं

वचो व्यलीकं सुरवर्य मन्यते ।

करोम्यृतं तन्न भवेत् प्रलम्भनं

पदं तृतीयं कुरु शीर्ष्णि मे निजम् ॥ २ ॥

श्रीबलिरुवाच यद्युत्तमश्लोक भवान् ममेरितं वचो व्यलीकं सुरवर्य मन्यते करोम्यृतं तन्न भवेत् प्रलम्भनं पदं तृतीयं कुरु शीर्ष्णि मे निजम्

अर्थ: बली ने कहा — हे गौरवशाली कीर्ति वाले, देवताओं में श्रेष्ठ, यदि आप मेरे वचन को असत्य सिद्ध हुआ मानते हैं, तो मैं उसे सत्य कर दूँगा ताकि कोई छल न रहे — कृपया, अपना तीसरा चरण मेरे ही मस्तक पर रखें। (स्कन्ध 8, अध्याय 22, श्लोक 2)

उन्होंने कहा कि उन्हें अपने पद से पतन का, नरक का, उन्हें बाँधने वाले पाशों का, किसी विपत्ति का, आर्थिक संकट का, अथवा भगवान के हाथों दण्ड का भी उतना भय नहीं जितना नीच कहलाने से।

बिभेमि नाहं निरयात् पदच्युतो
न पाशबन्धाद् व्यसनाद् दुरत्ययात् ।
नैवार्थकृच्छ्राद् भवतो विनिग्रहा-
दसाधुवादाद् भृशमुद्विजे यथा ॥ ३ ॥

बिभेमि नाहं निरयात् पदच्युतो न पाशबन्धाद् व्यसनाद् दुरत्ययात् नैवार्थकृच्छ्राद् भवतो विनिग्रहा- दसाधुवादाद् भृशमुद्विजे यथा

अर्थ: मैं नरक से नहीं डरता, न अपने पद से पतन से, न पाशों के बन्धन से, न किसी दुर्जय विपत्ति से, न आर्थिक संकट से, न आपके दण्ड से भी, जितना मैं एक अपयश से डरता हूँ। (स्कन्ध 8, अध्याय 22, श्लोक 3)

भगवान असुरों के सबसे बड़े हितैषी हैं

बली ने घोषित किया कि श्रेष्ठतम के द्वारा दिया गया दण्ड किसी के लिए भी सबसे प्रशंसनीय वस्तु है — एक ऐसा वरदान जो न माता, न पिता, न भाई, न मित्र कभी दे सकते हैं। शत्रु के वेश में, भगवान वस्तुतः असुरों के परम हितैषी थे, क्योंकि उन्हें पद से पतन का उपहार देकर उन्होंने उनकी आँखें खोल दी थीं, जो धन के अहंकार से अंधी थीं। उनके प्रति शत्रुता निभाते हुए, उन्होंने स्मरण किया, अनेक असुरों ने वही पूर्णता प्राप्त की जो अनन्य भक्त पाते हैं; अतः बली को वरुण के पाशों से बँधने पर न लज्जा हुई न शोक। उन्होंने अपने पितामह प्रह्लाद का स्मरण किया, जो भगवान के भक्तों द्वारा सम्मानित थे, और जिन्हें उनके अपने पिता हिरण्यकशिपु ने केवल इसलिए हर प्रकार की यातना दी क्योंकि वे भगवान के भक्त थे।

तब बली ने एक कठिन प्रश्न की ओर मुड़कर पूछा कि शरीर, परिवार और राज्य — इनमें से किसका वास्तव में कोई मूल्य था।

किमात्मनानेन जहाति योऽन्ततः
किं रिक्थहारैः स्वजनाख्यदस्युभिः ।
किं जायया संसृतिहेतुभूतया
मर्त्यस्य गेहैः किमिहायुषो व्ययः ॥ ९ ॥

किमात्मनानेन जहाति योऽन्ततः किं रिक्थहारैः स्वजनाख्यदस्युभिः किं जायया संसृतिहेतुभूतया मर्त्यस्य गेहैः किमिहायुषो व्ययः

अर्थ: उस शरीर का क्या उपयोग जो नियत समय पर, उसकी चाहे जितनी देखभाल की जाए, अपने स्वामी को त्याग ही देता है? उन स्वजनों का क्या उपयोग, जो परिवार के नाम पर वस्तुतः उस धन के लुटेरे मात्र हैं जो भगवान की सेवा में लग सकता था? उस पत्नी का क्या उपयोग, जो आत्मा को सांसारिक बन्धन में और गहरा खींचती है? और उस घर, राष्ट्र तथा समाज का क्या उपयोग, जिन पर जीवन की अल्प सम्पदा व्यय होकर नष्ट हो जाती है? (स्कन्ध 8, अध्याय 22, श्लोक 9)

बली ने अब समझ लिया कि जो कुछ भी उन्हें अपना प्रतीत होता था वह वस्तुतः भगवान का ही था, और उसका मूल्य केवल इसी में था कि वह उनकी सेवा में अर्पित किया जाए।

प्रह्लाद आते हैं

जब बली इस प्रकार कह रहे थे, तभी उनके पितामह प्रह्लाद — भगवान को प्रिय — पूर्ण चन्द्रमा के उदय की भाँति देदीप्यमान होकर आ पहुँचे।



जब बली निर्भय भक्ति में बोल रहे होते हैं, तब उनके पितामह प्रह्लाद — भगवान के प्रिय और उदित पूर्ण चन्द्रमा की भाँति देदीप्यमान — यज्ञभूमि में आ पहुँचते हैं (श्लोक 12-15)।

बली ने अपने पितामह को देखा, महिमा से देदीप्यमान, कमल-सम नेत्रों वाले, ऊँचे और लम्बी भुजाओं वाले, पीत वस्त्र धारण किए, और श्रेष्ठ पुण्यात्माओं के समान सुन्दर। वरुण के पाशों से बँधे बली उनका पहले की भाँति पूजन न कर सके; उन्होंने अपना मस्तक झुकाया, उनके नेत्र आँसुओं से भर आए, और वे लज्जा से मुख नीचा किए खड़े रहे। और प्रह्लाद ने, वहाँ भगवान को विराजमान और सुनन्द आदि पार्षदों से सेवित देखकर, निकट आकर भूमि पर मस्तक टेककर प्रणाम किया, प्रेममयी आनन्द के आँसुओं से विह्वल।

प्रह्लाद, विन्ध्यावली और ब्रह्मा याचना करते हैं

तब प्रह्लाद ने भगवान की स्तुति की, कहते हुए कि इन्द्र का जो राज्य भगवान ने स्वयं कभी बली को दिया था, और अब छीन लिया था, वह दोनों ही कर्मों में समान रूप से मंगलमय था — क्योंकि बली को उस सम्पत्ति से रहित करके जो आत्मा को मोहित करती है, भगवान ने उन पर सबसे बड़ी कृपा की थी। तब बली की साध्वी रानी विन्ध्यावली, अपने पति को बँधा देख व्यथित होकर, जुड़े हाथों से आगे आई और भगवान को स्मरण

कराया कि यह समस्त ब्रह्माण्ड उन्हीं की रचना और लीला है; जो भी उद्धत व्यक्ति स्वयं को इसका स्वामी और दाता माने वह मात्र मोहित है। और ब्रह्मा ने भी राजा की मुक्ति की याचना की, यह घोषित करते हुए कि बली, जिसने अटल मन से सब कुछ अर्पित कर दिया, बन्धन के योग्य नहीं।



बली की साध्वी रानी विन्ध्यावली और सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जुड़े हाथों से आगे आते हैं, भगवान से याचना करते हुए कि वे उस बँधे राजा को मुक्त करें जिसने अटल मन से सब कुछ अर्पित कर दिया है (श्लोक 19-23)।

भगवान अपनी कृपा का रहस्य प्रकट करते हैं

तब स्वयं भगवान बोले, अपने प्रियजनों के साथ अपने व्यवहार का अन्तरतम रहस्य प्रकट करते हुए।

श्रीभगवानुवाच

ब्रह्मन् यमनुगृह्णामि तद्विशो विधुनोम्यहम् ।

यन्मदः पुरुषः स्तब्धो लोकं मां चावमन्यते ॥ २४ ॥

श्रीभगवानुवाच ब्रह्मन् यमनुगृह्णामि तद्विशो विधुनोम्यहम् यन्मदः पुरुषः स्तब्धो लोकं मां चावमन्यते

अर्थ: भगवान ने कहा — हे ब्रह्मा, जिस पर मैं कृपा करता हूँ, उसे मैं उसकी सम्पत्ति से रहित कर देता हूँ; क्योंकि धन से उन्मत्त होकर मनुष्य अहंकारी हो जाता है और संसार तथा स्वयं मेरी भी अवहेलना करता है। (स्कन्ध 8, अध्याय 22, श्लोक 24)

अपने ही कर्मों के अनुसार असंख्य योनियों से गुजरता हुआ, भगवान ने समझाया, परतन्त्र जीव विरले ही मनुष्य-अवस्था पाता है — यह अत्यन्त उत्तरदायित्व का जन्म है, जिसे व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। जो कोई श्रेष्ठ कुल में जन्मा हो, अथवा सौन्दर्य, विद्या, यौवन, शक्ति या धन से सम्पन्न हो, और फिर भी उसमें कोई अहंकार न हो, उसे भगवान की विशेष कृपा का चिह्न समझना चाहिए, क्योंकि ऐसी अहंकार-रहितता स्वयं ही दुर्लभतम ऐश्वर्य है। जन्म और सौभाग्य आत्मा को मिथ्या अभिमान की ओर लुभा सकते हैं, भगवान ने कहा, परन्तु वे उसे कभी विचलित नहीं करते जो सचमुच उनके शरणागत है; केवल असत्य-हृदय भक्त ही अपनी सम्पत्ति से पराजित होता है।

बली ने भगवान को माया जीत ली है

तब भगवान ने बली की सच्ची महानता की घोषणा की।

एष दानवदैत्यानामग्रणीः कीर्तिवर्धनः ।

अजैषीदजयां मायां सीदन्नपि न मुह्यति ॥ २८ ॥

एष दानवदैत्यानामग्रणीः कीर्तिवर्धनः अजैषीदजयां मायां सीदन्नपि न मुह्यति

अर्थ: यह बली, दानवों और दैत्यों में अग्रणी तथा उनकी कीर्ति का वर्धक, मेरी अजेय माया को जीत चुका है; विपत्ति में पड़ा हुआ भी यह मोहित नहीं होता। (स्कन्ध 8, अध्याय 22, श्लोक 28)

दरिद्र और अपने पद से पतित, शत्रुओं द्वारा निन्दित तथा बँधा, अपने स्वजनों द्वारा त्यक्त, कष्ट में डाला गया, और अपने ही गुरु द्वारा शापित होकर भी, दृढ़ संकल्प वाले इस असुर ने सत्य को नहीं त्यागा।

यहाँ भगवान ने एक विस्मयकारी स्वीकृति दी: उन्होंने कहा कि यह वे स्वयं ही थे जिन्होंने बली से छलपूर्ण, परीक्षा लेने वाले वचनों में धर्म की बात कही थी — और फिर भी बली ने, अपने वचन के प्रति सच्चे रहते हुए, उस उचित मार्ग को नहीं छोड़ा। यही भगवान की अपने सबसे प्रिय भक्तों के प्रति पद्धति का हृदय है: वे केवल भक्त की श्रद्धा को देखते नहीं, वे उसकी परीक्षा भी लेते हैं, कभी-कभी अपने ही छल जैसे प्रतीत होने वाले उपायों से, ताकि भक्त की दृढ़ता आने वाली प्रत्येक पीढ़ी की महिमा के लिए अंकित हो जाए। इसी परीक्षा से होकर बली भगवान के अपने धाम तक, जो देवताओं के लिए भी दुर्लभ है, लगभग पहुँचा ही दिया गया था।

सुतल का दान

तब भगवान ने बली को उस राज्य से भी बड़ा वरदान प्रदान किया जिसे उन्होंने खोया था। भगवान ने घोषित किया कि बली आने वाले सावर्णि नामक मनु के काल में इन्द्र बनेंगे; और तब तक वे विश्वकर्मा द्वारा रचित सुतल के सुन्दर पाताल-प्रदेश पर शासन करें, जहाँ भगवान की अपनी कृपा-दृष्टि से उसके निवासियों को न कभी चिन्ता, न रोग, न थकान, न पराभव कभी छू सकेगा। वहाँ कोई लोकपाल उन्हें परास्त न कर सकेगा, और भगवान का अपना चक्र किसी भी उस असुर से उनकी रक्षा करेगा जो उनकी आज्ञा का उल्लंघन करे।

रक्षिष्ये सर्वतोऽहं त्वां सानुगं सपरिच्छदम् ।

सदा सन्निहितं वीर तत्र मां द्रक्ष्यते भवान् ॥ ३५ ॥

रक्षिष्ये सर्वतोऽहं त्वां सानुगं सपरिच्छदम् सदा सन्निहितं वीर तत्र मां द्रक्ष्यते भवान्

अर्थ: मैं तुम्हारी, तुम्हारे अनुयायियों और सम्पत्ति सहित, सब ओर से रक्षा करूँगा; और वहाँ, हे वीर, तुम मुझे सदा अपने पास उपस्थित देखोगे। (स्कन्ध 8, अध्याय 22, श्लोक 35)



भगवान बँधे और अटल बली को कृपापूर्वक आशीर्वाद देते हैं, उन्हें सुतल का देदीप्यमान लोक और यह वचन प्रदान करते हुए कि असुरराज भगवान को सदा अपने पास उपस्थित देखेंगे (श्लोक 31-36)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. सच्चा भय भगवान के समक्ष अपयश का भय है। बली न नरक से, न बन्धन से, न हानि से डरते हैं, केवल एक अपयश से — क्योंकि वे स्वयं को सुख अथवा शक्ति से नहीं, बल्कि अपने वचन के प्रति निष्ठा से मापते हैं (श्लोक 2-3)।
2. जब और कुछ न बचे तो समर्पण स्वयं को अर्पित करता है। देने को कोई भूमि शेष न रहने पर, बली भगवान के तीसरे चरण के लिए अपना ही मस्तक अर्पित करते हैं, यह शिक्षा देते हुए कि भक्त की अन्तिम भेंट स्वयं की भेंट है (श्लोक 2)।
3. जो भगवान का दण्ड प्रतीत होता है वह उनकी गहनतम कृपा है। बली भगवान को असुरों के सबसे बड़े हितैषी के रूप में आशीर्वाद देते हैं, क्योंकि जो पद से पतन एक विपत्ति प्रतीत हुआ वह वस्तुतः उनकी आँखों का खुलना था (श्लोक 4-6)।
4. भगवान अपने सबसे प्रिय भक्तों से धन हर लेते हैं। वे अपने प्रियतम भक्तों से धन और शक्ति इसलिए छीन लेते हैं कि कहीं घमण्ड उन्हें अंधा न कर दे, जिससे सम्पत्ति की वही हानि उनकी कृपा का चिह्न बन जाती है (श्लोक 24-27)।
5. जो घमण्ड को जीतता है वह भगवान की माया को जीतता है। बली, पतित, दरिद्र, बँधे और शापित होकर भी अविचल, अजेय माया को जीत चुके हैं — देवताओं के लिए भी दुर्लभ स्थान प्राप्त करते हुए (श्लोक 28-31)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

प्रत्येक गहरे समर्पण में एक क्षण आता है जब मनुष्य को यह बोध होता है कि जो वस्तु छीनी जा रही थी वह कभी सच्चा कोष थी ही नहीं। बली तीनों लोक खोते हैं, और पाते हैं कि उन्होंने ऐसा कुछ नहीं खोया जिसकी उन्हें आवश्यकता थी; वे बँधे, उपहासित और निःशेष कर दिए जाते हैं, और उसी शून्यता से समस्त वामन-कथा का सबसे स्वतन्त्र, सबसे निर्भय वचन निकलता है: *अपना तीसरा चरण मेरे मस्तक पर रखें*। उन्होंने वह समझ लिया है जो गर्वी कभी नहीं देख पाते — कि भगवान की कठोरता उनकी ही कोमलता का छद्म रूप है, कि भगवान द्वारा नीचे किया जाना

देवताओं की पहुँच से भी परे उठाया जाना है। और इसलिए इस अध्याय का महान विपर्यय यह नहीं कि एक राजा विनम्र किया जाता है, बल्कि यह कि एक भक्त का राज्याभिषेक होता है। भगवान बली का राज्य लेते हैं और उन्हें सुतल देते हैं; उनकी स्वतन्त्रता लेते हैं और अपनी निरन्तर उपस्थिति का वचन देते हैं; संसार जिसे सौभाग्य कहता है वह सब लेते हैं और उन्हें वह एकमात्र सम्पदा छोड़ देते हैं जो कभी नहीं खोई जा सकती — भगवान का सामीप्य, सदा उनके पास उपस्थित। यही रहस्य यह अध्याय हमें सौंपता है: कि भगवान एक प्रेममय हृदय से जो कुछ हरते हैं, वे केवल अपने लिए स्थान बनाने को हरते हैं।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, किसी एक वस्तु पर चिन्तन करें जिसे आपने खोया है — कोई अवसर, कोई सम्पत्ति, कोई आशा जो पूरी न हुई — और, उसका शोक करने के बजाय, उसे भगवान को वैसे ही अर्पित करें जैसे बली ने अपना मस्तक अर्पित किया। शान्त भाव से कहें, “यह भी मैं आपके चरणों में रखता हूँ,” और विचार करें कि क्या वह हानि किसी ऐसी कृपा के लिए स्थान बना रही थी जिसे आप अभी देख न सके। उस भेंट को इन शब्दों के साथ मुद्रित करें — “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,” यह विश्वास करते हुए, जैसे बली ने किया, कि भगवान एक भक्त हृदय से जो कुछ लेते हैं वे केवल निकट आने को लेते हैं, और कि उनकी उपस्थिति वह एकमात्र कोष है जिसे कोई हानि कभी छू नहीं सकती।

उपसंहार

आठवें स्कन्ध का बाईसवाँ अध्याय वामन-कथा का आध्यात्मिक शिखर है: एक सर्वस्व-रहित राजा यह जान लेता है कि भगवान द्वारा रिक्त किया जाना उनकी दुर्लभतम कृपा है। बली अपने वचन के स्थान पर अपना मस्तक अर्पित करना श्रेयस्कर मानते हैं, और भगवान इस निर्भय भेंट का उत्तर यह प्रकट करके देते हैं कि वे अपने सबसे प्रिय भक्तों को धन, अभिमान और संसार के समस्त सौभाग्य से बार-बार रिक्त क्यों करते हैं — ताकि उनके भीतर केवल स्वयं के लिए स्थान शेष रहे। प्रह्लाद का आगमन, विन्ध्यावली की प्रार्थना और ब्रह्मा की मध्यस्थता सभी उसी सत्य की पुष्टि करते हैं जिसे बली पहले से जानते हैं: भगवान के अपने हाथों से लिया गया कुछ भी वास्तव में खोया नहीं जाता। इसके बदले सुतल और भगवान की चिरन्तन समीपता से विभूषित होकर, बली इस बात के जीवन्त प्रमाण बन जाते हैं कि समर्पण ही, स्वामित्व नहीं, वह एकमात्र सम्पदा है जो सदा बनी रहती है। अगला अध्याय इस कथा को पूर्ण करता है, जब देवता स्वर्ग पुनः प्राप्त करते हैं।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), आठवाँ स्कन्ध, बाईसवाँ अध्याय, पृष्ठ 824–828।
- शृंखला: श्रीमद्भागवत विज़्डम • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठावान पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी और लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के साथ किसी सम्बन्ध अथवा उसके अनुमोदन का कोई अभिप्राय नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-22-bali-surrenders-his-life-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

